



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 210]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अगस्त 16, 2002/श्रावण 25, 1924

No. 210]

NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 16, 2002/SRAVANA 25, 1924

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

अंतिम जांच परिणाम की अधिसूचना

नई दिल्ली, 16 अगस्त, 2002

विषय: कोरिया गणराज्य तथा तुर्की से पाशियली ओरिएंटल यार्न के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच—अंतिम जांच परिणाम

सं. 36/1/2001-डीजीएडी.— भारत सरकार द्वारा 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अनिधिनियम, 1975 और उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं वसूली और क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 के अन्तर्गत:-

क. प्रक्रिया

1. जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया है:
 - 1.0 जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया है:
 - i. निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है) को नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग की ओर से मै0 एसोसिएशन ऑफ सिंथेटिक फाइबर इन्डस्ट्री, 125, उदय पार्क, प्रथम तल, नई दिल्ली-110049 से लिखित आवेदन प्राप्त हुआ था जिसमें कोरिया गण0 तथा तुर्की मूल के अथवा वहां से निर्यातित पीओवाई के पाटन का आरोप लगाया गया है।
 - ii. प्राधिकारी ने 20 अगस्त, 2001 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया, जिसके द्वारा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के शीर्ष 5402.42 के तहत वर्गीकृत कोरिया गणराज्य, तुर्की के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पीओवाई के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू की गई थी।
 - iii. प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों के बारे में भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित 23 नवम्बर, 2001 की एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी।
 - iv. प्राधिकारी ने उन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को प्रारंभिक निष्कर्षों की एक प्रति भेजी थी जिनसे पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर प्रारंभिक निष्कर्षों के बारे में अपने विचार, यदि कोई हों, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था।
 - v. प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों की एक प्रति नई दिल्ली स्थित कोरिया गणराज्य और तुर्की के दूतावासों को इस अनुरोध के साथ भेजी थी कि वह निर्यातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रारंभिक निष्कर्षों पर अपने-अपने विचार भेजने की सलाह दें।

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 2nd August 2002

OBITUARY

No. 3/3/2002-Public.—Shri Krishan Kant, Vice-President of India, passed away in the morning of 27th July, 2002 at New Delhi. The death of Shri Krishan Kant has deprived the country of a true Gandhian who always stood for democratic values. Shri Krishan Kant was an able Statesman, a seasoned Parliamentarian and humanist to the core.

2. Shri Krishan Kant was born on February 28, 1927 at village Kot Mohammed Khan, Tehsil-Taran Taran, Amritsar, Punjab in a family of freedom fighters. He obtained his M.Sc. degree from the Banaras Hindu University. He worked as a Scientist with the Council of Scientific and Industrial Research, New Delhi.

3. Shri Krishan Kant took active part in the freedom struggle and was interned for two years during the Quit India Movement. He was a well known students leader. He was a member of the Rajya Sabha from 1966 to 1977 and subsequently a Member of the Lok Sabha from 1977 to 1980.

4. He was a prolific writer and contributed profusely to prominent dailies and periodicals on issues relating to national and international politics, culture and India's scientific, defence and foreign policies. He was also Editor of the Journal "Science in Parliament".

5. Shri Krishan Kant was the Secretary of the Indian Parliamentary and Scientific Committee of which Pandit Jawahar Lal Nehru was the President. He was the President of the Servants of the Peoples Society since July, 1991. A well known educationist, he was the Chancellor of the Delhi University, Punjab University, Pondicherry University and North Eastern Hill University.

6. He was Governor of Andhra Pradesh from February, 1990 to August, 1997. He assumed office of the Vice-President of India in August, 1997. He was a dedicated leader and social activist and an erudite person who stood for value-based politics.

7. Shri Krishan Kant is survived by his mother, wife, two sons and a daughter

KAMAL PANDE, Secy.

अधिसूचना के द्वारा कोरिया और तुर्की के खिलाफ जांच की शुरुआत की थी। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित प्रारंभिक निष्कर्षों में पुनः इस बात की पुष्टि की गई कि इन देशों के निर्यातकों द्वारा व्यापक मात्रा में पाटन किया गया है।

2.1.3 याचिकाकर्ताओं ने उल्लेख किया है कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के विरुद्ध कोई तर्क नहीं दिया गया है।

2.1.4 उन्होंने उल्लेख किया है कि भागीदार कंपनियां और समर्थक कंपनियों का भारतीय उत्पादन में 50% से अधिक हिस्सा हैं और इस प्रकार ये याचिका दायर करने की स्थिति में हैं।

अन्य मुद्दे:

2.2 घरेलू उद्योग ने अमरीका डालर के रूप में शुल्क का अनुरोध किया है

यद्यपि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पहले ही अमरीकी डालर के रूप में पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की है तथापि यह अनुरोध किया गया है कि अंतिम शुल्क भी केवल अमरीकी डालर के रूप में ही लगाने की सिफारिश की जाए ताकि विनिमय दर में परिवर्तन के कारण संरक्षण की मात्रा में कटौती न हो सके।

प्रारंभिक जांच परिणामों और किए गए उपर्युक्त अनुरोधों से यह स्पष्ट है कि भारत में पी ओ वाई के भारी पाटन के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हो रही है। यह अनुरोध किया गया है कि प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि की जाए और नियत शुल्कों की सिफारिश की जाए।

2.3 मै. सोनमेज फिलामेंट बुरसा, टर्की

निर्यातकों ने उल्लेख किया है कि उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से अथवा न ही किसी संबद्ध कंपनी के जरिए भारत में पी ओ वाई का निर्यात किया है।

2.4 कोरिया गणराज्य दूतावास, नई दिल्ली

यह उल्लेख किया गया है कि दो कोरियाई कंपनियों अर्थात् मै. टी ए ई हान सिंथेटिक्स फाइबर कं.लि. और मै. जे ई आई एल सिंथेटिक्स फाइबर कं.लि. ने पिछले पांच वर्षों में पार्शियली ओरिएंटेड यार्न (पी ओ वाई) का निर्यात नहीं किया है।

उपरोक्त कंपनियों ने भारत को हुए पी ओ वाई के निर्यातों के संबंध में पाटनरोधी जांच में हिस्सा लेने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई है और सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने में भी उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है।

2.5 मै. जील सिंथेटिक्स फाइबर कं.लि. सिओल, कोरिया

निर्यातकों ने उल्लेख किया है कि उन्होंने जांच अवधि अर्थात् 1 अप्रैल 2000 से 31 मार्च, 2001 के दौरान पी ओ वाई का निर्यात नहीं किया है उनका अंतिम निर्यात फरवरी, 1997 में हुआ था। उस अवधि के दौरान ऐसी कोई कंपनी नहीं थी जिसने भारत की तरह के डी ओ पी ई डाइड (रंगीन) पी ओ वाई का

उत्पादन किया हो। उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि उनके पी ओ वाई का उत्पादन डोप डाइड (रंगीन) यार्न का है न कि कच्चे सफेद यार्न का, जिसका भारत उत्पादन करता है और डोप डाइड (रंगीन) यार्न की कीमतें भारत के कच्चे सफेद (सामान्य) यार्न से काफी अधिक हैं।

ग. उठाए गए मुद्दों की जांच

3.0 याचिकाकर्ता, निर्यातकों तथा आयातकों द्वारा किए गए अनुरोधों पर उस सीमा तक विचार किया गया है तथा यहां आगे उचित स्थानों पर इन पर चर्चा की गई है, जहां तक नियमों के तहत ये संगत है और जहां तक इनका इस मामले से संबंध है।

घ. विचाराधीन उत्पाद

4.1 वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद कोरिया जनवादी गणराज्य तथा तुर्की मूल का और वहां से निर्यातित पार्शियली ओरिएंटेड यार्न है। पार्शियली ओरिएंटेड यार्न को वाणिज्यिक एवं बाजार की भाषा में सामान्यतः पी ओ वाई के रूप में जाना जाता है और इस जांच में इसका उल्लेख पी ओ वाई के रूप में किया गया है। पी ओ वाई पालीस्टर का एक यार्न है और विभिन्न वर्गों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इसका निर्माण 50 डेनियर से 530 डेनियर की विस्तृत रेंज में किया जाता है। डेनियर का संबंध यार्न की बारीकी से है, डेनियर जितना कम होगा यार्न उतना ही पतला होगा। पी ओ वाई एक मध्यवर्ती उत्पाद है जिसे आगे और प्रसंस्करण (जैसे-टेक्सचरिंग अथवा ड्राटिवस्टिंग) किया जाता है ताकि इसे फैब्रिक्स के रूप में वीविंग अथवा निटिंग करने के लिए उपयुक्त बनाया जा सके। पी ओ वाई पी एफ वाई (जिसका सीमाशुल्क वर्गीकरण 5402.43 है) से भिन्न है। और पी एफ वाई वर्तमान जांच के दायरे में नहीं है।

4.2 पीओवाई सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 54 के अन्तर्गत वर्गीकृत है। अध्याय 54, जहां तक इसका संबंध पीओवाई से है, का विवरण निम्नानुसार है:-

अध्याय/उपशीर्ष	विवरण
अध्याय-54	मानव निर्मित फिलामेंट
चार अंकीय 54.02	67 डेसीटेक्स से कम के सिंथेटिक मोनोफिलामेंट सहित सिंथेटिक फिलामेंटयार्न (सिलाई धागे को छोड़कर), जिसे खुदरा बिक्री के लिए नहीं रखा जाता है।
अन्य यार्न, एकल, अनट्विस्टेड अथवा प्रतिमीटर 50 टन से कम ट्विस्टवाला	
छः अंकीय 5402.42	पालिस्टर, पार्शियली ओरिएंटेड

तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी प्रकार बाध्यकारी नहीं है।

4.3 प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस बात का खंडन करते हुए कोई तर्क नहीं दिया है कि याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित पीओवाई और निर्यातकों द्वारा उत्पादित और निर्यातित पीओवाई विचाराधीन उत्पाद से भिन्न है।

ड. समान वस्तुएं

5.1 पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) में यह विनिर्दिष्ट किया गया है कि समान वस्तु का तात्पर्य ऐसी किसी वस्तु से है जो सभी प्रकार से जांचाधीन उत्पाद के समान अथवा सदृश हो अथवा ऐसी किसी वस्तु के अभाव में ऐसी अन्य वस्तु से है, जिसकी विशेषताएं जांचाधीन वस्तु की विशेषताओं से अत्यधिक मेल खाती हों;

5.2 याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि खासतौर पर भागीदार कम्पनियों द्वारा उत्पादित तथा आम तौर पर भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित माल और सम्बद्ध देशों से निर्यातित पीओवाई के बीच ऐसा कोई ज्ञात अन्तर नहीं है जिसका कीमत पर प्रभाव पड़ सकता है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित और इन देशों से आयातित पीओवाई भौतिक और रासायनिक विशेषताएं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य तथा उपयोग, उत्पाद के विनिर्देशन, कीमत वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के संबंध में समान हैं। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ताओं ने इन देशों से आयातित पीओवाई और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पीओवाई का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर किया है। भागीदार कम्पनियों द्वारा उत्पादित और इन देशों से आयातित पीओवाई को पाटन-रोधी नियमावली के तहत समान वस्तु के रूप में माना जाना चाहिए। किसी हितबद्ध पक्षकार ने याचिकाकर्ताओं के उपरोक्त दावे के प्रतिकूल कोई तर्क नहीं दिया है। उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और सम्बद्ध देशों से आयात किए जा रहे पीओवाई नियमों के तात्पर्य से समान वस्तुएं हैं।

च. घरेलू उद्योग

6.0 याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि भारत में पी ओ वाई के 34 से भी ज्यादा उत्पादक हैं जिनके पास पी ओ वाई की उत्पादन की क्षमता है। यह याचिका ए एस एफ आई द्वारा दायर की गई है और मै. रिलायन्स, इंडोरामा, सेंचुरी, तथा भागीदारों द्वारा समर्थित है। तथापि मै. डी.सी.एल. संघी तथा रेकार्ड केवल याचिका का समर्थन कर रहे हैं।

जांच की अवधि के दौरान भागीदार कंपनियों का उत्पादन में बड़ा हिस्सा रहा है और इसलिए प्राधिकारी यह मानते हैं कि याचिकाकर्ता वर्तमान याचिका दायर करने संबंधी योग्यता को पूरा करते हैं और भागीदार कंपनियां नियमानुसार घरेलू उद्योग का रूप हैं।

छ. पाटन

7.0 प्राधिकारी द्वारा सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन और जांच के संबंध में निम्नानुसार विचार किया गया है:-

7.1 धारा 9क (1)(ग) के अधीन किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अभिप्राय यह है कि:

(i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो; या

(ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या बाजार की विशेष स्थिति के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो:-

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु का उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत जिसमें प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि की गई हो ।

बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूल देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु का निर्यात के देश से केवल यानान्तरण किया गया हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूल देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा ।

7.2 घरेलू उद्योग के विचार

पाटन के संबंध में

प्रारंभिक जांच परिणामों में पाटन मार्जिन, तुर्की के मामले में निर्यातकों द्वारा दिए गए उत्तरों के आधार पर जबकि कोरिया के मामले में सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर तय किया गया है । यह बताना प्रासंगिक होगा कि कोरिया के निर्यातकों ने निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा भेजी गई शुरुआत की सूचना का कोई उत्तर नहीं दिया है ।

तुर्की के मामले में, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निर्यातकों के सभी प्रतिउत्तरों को किसी भी आंकड़े/दावे को अस्वीकार ने करत हुए मान लिया है । हम आश्वस्त हैं कि, यदि उत्तरों की छानबीन विस्तार से की जाए तो पाटन मार्जिन दावा किए गए मार्जिन से अधिक ही होगा । याचिकाकर्ता प्राधिकारी से विशेष रूप से इस बात की जांच करने का आग्रह करते हैं कि क्या निर्यातक के पास नियमावली अनुबंध-1 के अनुसार पर्याप्त व्यवहार्य घरेलू बिक्रियां थी । इसके अलावा निर्यातकों द्वारा किए गए उत्पादन लागत के दावों की जांच भी घरेलू उद्योग द्वारा किए गए दावों के संदर्भ में की जानी चाहिए ।

7.3 तुर्की सरकार के विचारों पर घरेलू उद्योग की टिप्पणियां

1. दूतावास ने यह कहा है कि तुर्की सरकार तथा संबंधित कंपनियों ने विस्तार से टिप्पणियां दी हैं। तथापि न तो ऐसा प्रारंभिक जांच निष्कर्षों से मालूम होता है और न ही याचिकाकर्ताओं को प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात किसी टिप्पणी की जानकारी है।
2. तुर्की से आयात निर्धारित न्यूनतम ऊपरी सीमा से अधिक है। इसके अलावा न तो भारतीय नियमों के अधीन और न ही पाटनरोधी संबंधी डब्ल्यू टी ओ करारों के अधीन देश में उत्पाद की मांग के संदर्भ में कोई निर्धारित न्यूनतम ऊपरी सीमा की शर्त है।
3. तुर्की तथा कोरिया जनवादी गणराज्य से आयातों का मूल्यांकन समग्र रूप से करना चाहिए, जिनके लिए इस मामले में सभी शर्तें पूरी होती हैं। विरोधी हितबद्ध पक्षकारों का यह तर्क भी नहीं है कि इस मामले में समग्र मूल्यांकन उचित नहीं होगा।
4. यह कहना गलत और अनुचित है कि तुर्की से आयातित उत्पाद घटिया था। निर्यातकों द्वारा यह सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है कि निर्यातित उत्पाद घरेलू रूप से बेचे गए उत्पाद से भिन्न था। निर्यातित उत्पाद घरेलू रूप से बेचे गए उत्पाद तथा भारतीय उत्पादकों द्वारा बेचे जा रहे उत्पाद के समान वस्तु था। इसके अलावा, पाटन मार्जिन के प्रयोजनार्थ समान वस्तु के सामान्य मूल्य को देखना आवश्यक है। इसी प्रकार क्षति मार्जिन को भारत में समान उत्पाद के संदर्भ में देखना आवश्यक है।
5. यह स्वीकृत तथ्य है कि तुर्की से आयात निर्धारित न्यूनतम ऊपरी सीमा से अधिक थे इस तरह का मामला होने के कारण आयातों को नगण्य नहीं कहा जा सकता है वस्तुतः एक प्रकार से निर्यातकों ने भारतीय उत्पादकों को हुई क्षति को स्वीकार किया है।
6. यद्यपि यह सत्य हो सकता है कि तुर्की से निर्यात कीमत में गिरावट की प्रवृत्ति नहीं दिखाई दी परन्तु यह नोट करना संगत है कि (क) तुर्की और कोरिया की निर्यात कीमत को समग्र रूप से देखा जाने की आवश्यकता है (जो यह दर्शाता है कि पिछले वर्षों की तुलना में जांच अवधि में सबद्ध देशों की निर्यात कीमत में गिरावट आई;) (ख) वर्ष 1999-2000 में तुर्की से निर्यातों की मात्रा बहुत कम (न्यूनतम सीमा से कम) थी। इस तरह से इस मामले में वर्ष 1999-2000 में तुर्की की निर्यात कीमत निरूपण योग्य नहीं है। वर्ष 1999-2000 की कीमतें भी प्रारंभिक कीमतें रही होंगी, क्योंकि कुल शामिल मात्रा जांच अवधि में 3.6% की तुलना में कुल आयात केवल 0.41% थे।

7. 2001 के उत्तरार्द्ध में निर्यातों के बारे में, यह अनुरोध किया गया है कि जांच अवधि में किए गए आयात समग्र रूप से इसका एकमात्र उचित मापदंड है। यद्यपि उक्त आयात केवल जांच अवधि के एक महीने में हुए थे (जिसकी मात्रा जांच अवधि के हुए आयातों की मात्रा की न्यूनतम ऊपरी सीमा से अधिक थी), तथापि उन पर शुल्क लगाया जा सकता है। वर्तमान मामले में उनकी खुद की स्वीकारोक्ति के अनुसार आयात जांच अवधि के लगभग छः महीनों में हुए थे। हम निर्विष्ट प्राधिकारी का ध्यान पूरे हो चुके ऐसे विभिन्न मामलों की ओर आकर्षित करते हैं जिनमें आयात समूची जांच अवधि में समान रूप से नहीं हुए थे।
8. जांच को खत्म करने के औचित्य के लिए प्रतिपक्षी हितबद्ध पक्षकार द्वारा कोई तर्कपूर्ण कारण नहीं दिए गए हैं। वस्तुतः तुर्की के निर्यातकों द्वारा दिए गए उत्तरों से स्पष्ट तौर पर पर्याप्त पाटन मार्जिन की पुष्टि होती है। याचिकाकर्ता कंपनियों द्वारा दायर की गई सूचना से घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति तथा घरेलू उद्योग को आगे वास्तविक क्षति तथा घरेलू उद्योग को आगे वास्तविक क्षति के खतरे की पुष्टि होती है।

7.4. तुर्की सरकार के विचार

आयात महानिदेशक तुर्की सरकार ने अपने निवेदनों में इस प्रकार बताया है कि:-

1. तुर्की सरकार इस तथ्य पर जोर देना चाहेगी कि तुर्की से आयातित उत्पाद जो कुल मांग का मात्र 0.1% है और जो घटिया किस्म का है, घरेलू रूप से उत्पादित उत्पादों के साथ किसी भी रूप में प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहा था और इसलिए यदि कोई क्षति हुई हो तो इसका कारण तुर्की से हुए पर्याप्त आयातों को नहीं बताया जाना चाहिए।
2. यह मालूम हुआ है कि तुर्की के उत्पादकों की सूचना, आकड़ों और गणनाओं के सारांश को बेहतर ढंग से समझने के लिए जो विषयवस्तु उपलब्ध कराई गई थी उनके पर्याप्त ब्यौरे नहीं थे और करार के अनुच्छेद-3 में सूचीबद्ध कारकों की बिल्कुल जांच नहीं की गई थी।

3. अधिसूचना से यह मालूम होता है कि इस जाँच हेतु जांच अवधि का चयन पहला अप्रैल, 2000 से 31 मार्च, 2001 तक के लिए किया गया है। यह इस तथ्य के बावजूद है कि जांच की अवधि ऐसी चुनी जानी चाहिए जिसमें जांच प्रारंभ संबंधी अधिसूचना के संबंध में हाल की अवधि शामिल हो।
4. तुर्की को वर्तमान जाँच में तुर्की तथा कोरिया से हुए आयातों के संचयी आकलन की प्रयाज्यता के बारे में चिंता है।
5. मै0 एसएएसए के लिए शामिल की गई ऋण लागत पर विचार करते समय यह बताया गया है कि प्राधिकारी ने ऋण लागत का परिकलन प्रयोग की गई वास्तविक ऋण लागतों की बजाए वर्ष 2000 तथा 2001 के लिए लागत की औसत के रूप में माना है। शामिल की गई आरोपित ऋण लागत का दावा प्रतिवादी द्वारा सार्थक तुलना करने के लिए निर्यात कीमतों और आस्थगित भुगतानों के लिए घरेलू बाजार की कीमतों को समायोजित करने हेतु दावा किया गया था।
6. घरेलू तौर पर बेचे गए और निर्यातित उत्पादों के बीच गुणवत्ता के अन्तर मै0 कोरटेक्स द्वारा प्रश्नावली के उत्तरों में पहले उल्लिखित अंतरों को प्रारंभिक जांच निष्कर्षों में दिए गए विवरणों के प्रतिकूल बताया है जिनका दावा है कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कोई तर्क नहीं दिए गए थे। तुर्की ने यह निवेदन किया है कि घरेलू तौर पर बेचे गए उत्पाद और भारत को निर्यात किए गए उत्पाद की वस्तुगत विशिष्टता और गुणवत्ता के अंतरों को ध्यान में रखा जाना चाहिए और शुल्क के समायोजनों की अनुमति दी जानी चाहिए। अतः निर्धारित किए गए पाटन मार्जिनों को तदनुसार शुद्ध किया जाना चाहिए।
7. तुर्की सरकार ने यह समीक्षा की है कि प्राधिकारियों ने घरेलू उद्योग में यदि कीमतों और लाभकारिता में यदि कोई कमी आई है तो उसे तुर्की से किए गए आयात के प्रभावों के कारण आई गिरावट बताया जाना अनुचित है और प्राधिकारी करार के अनुच्छेद 3.4 के अंतर्गत यथापेक्षित घरेलू उद्योग पर आयातों पर हुए दूसरे प्रभाव की जाँच करने में विफल रहे हैं।
8. आयातों और घरेलू बाजार में तथाकथित क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का कोई सकारात्मक साक्ष्य नहीं है।
9. तुर्की सरकार ने भारतीय प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि उपर्युक्त मुद्दों का मूल्यांकन किया जाए, और तुर्की मूल से किए जा रहे आयातों से संबंधित जांच को समाप्त किया जाए।

7.5 मै0 सोनमेज फिलामेंट बुर्सा, तुर्की

निर्यातकों ने यह बताया है कि उन्होंने भारत में प्रत्यक्ष रूप से अथवा किसी सम्बद्ध कम्पनी के माध्यम से पीओवाई का कोई निर्यात नहीं किया है।

7.6 कोरिया गणराज्य, दूतावास, नई दिल्ली

यह बताया गया है कि दो कोरियाई कम्पनी नामतः मै0 तार्ईहान सिंथेटिक्स फाइबर कं0लि0 तथा मै0 जील सिंथेटिक्स फाइबर कं0लि0 ने पिछले पांच वर्षों से भारत को पीओवाई का निर्यात नहीं किया है।

7.7 उक्त कम्पनियो ने भारत को निर्यात किए गए पीओवाई के संबंध में की जा रही पाटनरोधी जांच में भाग लेने के लिए कोई रूचि नहीं दिखाई है और वह सार्वजनिक सुनवाई में उपस्थित होने के लिए भी इच्छुक नहीं है।

7.8 मै0 जील सिंथेटिक्स फाइबर कं0 लि0, सिओल, कोरिया

निर्यातक ने बताया है कि उन्होंने जांचाधीन अवधि अर्थात् 1 अप्रैल, 2000 से 31 मार्च, 2001 तक पीओवाई का निर्यात नहीं किया है। उन्होंने फरवरी, 1997 में अंतिम निर्यात किया था। ऐसी कोई कम्पनी नहीं थी जिसने उस अवधि के दौरान भारत जैसे डीओपीई डाइड (कलर) पीओवाई का उत्पादन किया हो।

उन्होंने यह भी बताया है कि वह डीओपीई डाइड (कलर) यार्न का उत्पादन करते हैं और कच्चे सफेद यार्न का नहीं जिसका उत्पादन भारत में होता है और डीओपीई डाइड (कलर) यार्न की कीमत भारत के कच्चे सफेद (रेगुलर) यार्न से बहुत अधिक है।

7.9 प्राधिकारी द्वारा मुद्दों की जांच

तुर्की सरकार के विचारों के संबंध में

(नई दिल्ली स्थित तुर्की दूतावास के वाणिज्यिक काउंसल अधिकारी के माध्यम से)

(क) प्राधिकारी नोट करते हैं कि तुर्की से किए गए आयात न्यूनतम निर्धारित सीमा से अधिक थे। इसके अतिरिक्त न तो पाटनरोधी भारतीय नियमों और न ही डब्ल्यूटीओ करार के अंतर्गत देश में उत्पाद की मांग के संदर्भ में कोई निर्धारित न्यूनतम सीमा की शर्त है।

(ख) प्राधिकारी नोट करते हैं कि तुर्की और कोरिया आरपी० से हुए आयातों का मूल्यांकन संचयी तौर पर किए जाने की आवश्यकता है जिसकी शर्तें इस मामले में पूर्णरूपेण पूरी की गई हैं। विरोधी हितबद्ध पक्षकारों का यह तर्क भी नहीं है कि इस मामले में संचयी मूल्यांकन उचित नहीं होगा।

(ग) तुर्की से आयातित उत्पाद की घटिया किस्म के बारे में प्राधिकारी नोट करते हैं कि बिक्री बीजक पर इंगित साक्ष्य के अलावे कि उन्होंने नामतंत्र निम्नस्तर के तहत बेचा है, कोई भी साक्ष्य यह साबित करने के लिए निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत नहीं किया गया है कि निर्यातित उत्पाद घरेलू तौर पर बेचे गए उत्पाद से भिन्न था। निर्यातित उत्पाद घरेलू तौर पर बेचे गए तथा भारतीय उत्पादकों को बेचे गए उत्पाद के समान वस्तु था।

7.10 मै० एस०ए०एस०ए०, तुर्की

सामान्य मूल्य

कम्पनी ने 133 डीटीईएक्स एसएस तथा 283 डीटीईएक्स एसएस तथा अन्य घरेलू बिक्रियों के संबंध में घरेलू बाजारों में की गई बिक्रियों का ट्रांजेक्सन-वाइज तथा डेनियर-वाइज ब्यौरा प्रस्तुत किया। कम्पनी ने भारत को निर्यात किए गए पीओवाई प्रकार के संबंध में घरेलू बिक्रियों के उत्पादन लागत पर भी सूचना प्रस्तुत की। यह देखा गया है कि भारत को निर्यात किए गए तथा घरेलू बाजार में बेचे गए 283 डीटीईएक्स पीओवाई के मामले में औसत बिक्री प्राप्ति उत्पादन लागत से कम है। तदनुसार, नियमों के अनुबंध 1 के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारण करने के उद्देश्य से जांच अवधि के दौरान पीओवाई के इस डेनियर के उत्पादन लागत पर लाभकारी सौदों का मूल्यांकन करने के प्रयोजनार्थ विचार किया गया है।

सामान्य मूल्य का निर्धारण 133 डीटीईएक्स एसएस तथा व्यवहारिक घरेलू बिक्रियों पर आधारित 283 डीटीईएक्स एसएस के संबंध में दी गई सूचना के आधार पर किया गया है। प्राधिकारी द्वारा घरेलू बिक्रियों पर ऋण लागत के लिए किए गए समायोजनों की अनुमति देने के पश्चात पीओआई के दौरान कम्पनी द्वारा घरेलू बाजार में बेचे गए दो प्रकार के पीओवाई हेतु औसत बिक्री कीमत निर्धारित की गई है।

निर्यात कीमत

भारत को निर्यात किए गए पीओवाई के दो प्रकार हेतु निर्यात कीमत अलग-अलग निर्धारित किए गए हैं। कम्पनी द्वारा समुद्री भाड़े, बीमा, कमीशन, अंतर्देशीय भाड़े तथा हैंडलिंग के लिए दावा किए गए समायोजनों की मूल रूप में अनुमति दे दी गई है और प्राधिकारी ने इसका सत्यापन किया है।

घरेलू बाजार में बिक्री किए गए पीओवाई के दोनों प्रकारों के सामान्य मूल्य की तुलना भारत को निर्यातित पीओवाई के दोनों प्रकारों के साथ अलग से की गई है। प्राधिकारी ने औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण भारत को हुए पीओवाई के दोनों प्रकारों के आयातों की मात्रा के आधार पर की है।

7.11 मै0 कोर्टेक्स, तुर्की

सामान्य मूल्य

निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान पीओवाई के सभी डेनियरों की घरेलू बिक्रियों के ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं। निर्यातक ने दावा किया है कि घरेलू बिक्री कीमत की तुलना निर्यात कीमत के साथ करने के प्रयोजनार्थ इन्हीं डेनियरों पर विचार किया जाना चाहिए। उन्होंने भारत को निर्यातित पीओवाई के इन्हीं डेनियरों/प्रकारों की घरेलू बिक्रियों के अलग से ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं। तथापि, यह पाया गया है कि कंपनी ने भारत को निर्यातित डेनियरों के सभी प्रकारों की घरेलू बाजार में बिक्री नहीं की है। यह पाया गया है कि भारत को निर्यातित पीओवाई के दोनों प्रकारों तथा घरेलू बाजार में बिक्री किए गए प्रकारों के मामले में बिक्री प्राप्ति उत्पादन लागत से कम रही है। तदनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ जांच अवधि के दौरान पीओवाई की एस जी के हित और उचित प्राप्तियों सहित औसत उत्पादन लागत पर अनुमोदित तीसरे देश को बिक्रियों के न होने की स्थिति में विचार किया गया है।

निर्यात कीमत

भारत को निर्यातित पीओवाई के सभी प्रकारों के लिए भारित औसत निर्यात कीमत का पृथक् निर्धारण किया गया है। कंपनी द्वारा समुद्री भाड़े, बीमा, कमीशन, अंतर्देशीय भाड़े और हैंडलिंग के लिए दावा किए गए समायोजनों की अनुमति कंपनी द्वारा किए गए दावे के अनुसार प्रदान की गयी है।

जैसे कि ऊपर चर्चा की गई है पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए सामान्य मूल्य की तुलना भारत को निर्यातित पीओवाई की भारित औसत निर्यात कीमत के साथ करने का प्रस्ताव है।

7.12 असहयोगी निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन का निर्धारण

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उपरोक्त पैराग्राफों में उल्लिखित निर्यातकों को छोड़कर संबद्ध देशों (क्रोशिया ग रा समेत) से किसी अन्य निर्यातक द्वारा निर्धारित प्रपत्र में सूचना प्रस्तुत नहीं की गयी है। अतः प्राधिकारी ने नियम 6(8)

तदनुसार, किसी विशेष देश के " अन्य निर्यातकों " के लिए सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत को याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना/सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर आधारित करने का प्रस्ताव है।

8.1 पाटन मार्जिन: तुलना से संबंधित नियमों में सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना के लिए निम्नानुसार प्रावधान है :-

पाटन मार्जिन निकालते समय, निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के उसी स्तर पर सामान्यतया कारखाना द्वारा स्तर पर की जाएगी और यथासंभव उसी समयावधि के दौरान की गई बिक्रियों के संबंध में की जाएगी जो अंतर तुलनीयता पर प्रभाव डालते हैं, उनके लिए प्रत्येक मामले में गुण-दोष के आधार पर समुचित छूट दी जाएगी; अन्तर में शामिल हैं - बिक्री की शर्तें, कराधान व्यापार के स्तर, मात्राएं, वास्तविक विशेषताएं तथा कोई अन्य अन्तर जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किए जाते हैं।

8.2 तदनुसार, प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण के प्रयोजनार्थ सहयोगी निर्यातकों और अन्य असहयोगी निर्यातकों के लिए कारखाना द्वारा पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण किया है।

देश	निर्यातक का नाम	सामान्य मूल्य अम0डा0/किग्रा0	निर्यात कीमत अम0डा0/किग्रा0	पाटन मार्जिन अम0डा0/किग्रा0	निर्यात कीमत के प्रतिशत के रुप में पाटन मार्जिन
तुर्की	मै0 एसएसएस ड्यूपोट सावांसी पॉलिएस्टर एस	***	***	***	62.16
	मै0 कोर्टेक्स मैन्सुकेट साबातु वीड टिकारेट एस, तुर्की, (कोर्टेक्स)	***	***	***	44.38
	अन्य निर्यातक	***	***	***	139.40

कोरिया	सभी निर्यातक	***	***	***	77.86
गणराज्य					

झ. क्षति और कारणात्मक संबंध

9.0 उपरोक्त नियम 11, अनुबंध- II के अंतर्गत जब क्षति के बारे में निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष में " पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में मूल्यों पर उनका प्रभाव, ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामकारी प्रभावों समेत सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा । मूल्यों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात की जांच करनी आवश्यक समझी जाती है कि क्या भारत में समान वस्तु के मूल्य की तुलना में पाटित आयातों से मूल्यों में पर्याप्त गिरावट आई है अथवा क्या अन्यथा ऐसे आयातों का उद्देश्य मूल्यों को काफी हद तक कम करना है अथवा ऐसी मूल्य वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गयी होती ।

9.1 नियमों के अनुबंध II नियम(III) में यह व्यवस्थ है कि जिस मामले में किसी उत्पाद का आयात एक से अधिक देशों से हुआ हो और उनकी एक साथ पाटनरोधी जांच हो रही है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संयोजी रूप से मूल्यांकन केवल तब करेगा जब वह यह निर्धारित करता है कि:

(क) प्रत्येक देश से किए गए आयातों के बारे में तय किया गया पाटन मार्जिन निर्यात मूल्य के रूप में दिए गए 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से किए गए आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों का 3 प्रतिशत है अथवा जहां प्रत्येक देश का निर्यात 3 प्रतिशत से कम है वहां संयोजी रूप से आयात समान वस्तु के आयातों का 7 प्रतिशत से अधिक बनता है, और

(ख) आयातित वस्तु और समान वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति को देखते हुए आयातों के प्रभावों का संयोजी मूल्यांकन करना उचित है ।

घरेलू उद्योग को हुई क्षति से संबंधित विभिन्न कारकों पर प्रारंभिक जांच परिणामों में चर्चा की गई है और उन्हीं पर अंतिम निर्धारण हेतु विचार किया जा रहा है ।

विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्क निम्नानुसार हैं :

9.2 घरेलू उद्योग के विचार

क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में

यह अनुरोध किया जाता है कि भारत में पीओवाई के किए गए भारी पाटन से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है जो घरेलू उद्योग द्वारा दायर की गई याचिका और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित प्रारंभिक जांच परिणामों से स्पष्ट होती है। उन्होंने अनुरोध किया है कि निम्नलिखित मापदंडों से यह स्पष्ट तौर पर सिद्ध हो जाता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है :-

क. चूंकि कुछ समय से कोरिया से निर्यात पाटित कीमतों पर हो रहे हैं (जिसके बारे में घरेलू उद्योग ने याचिका भी दायर की थी), इसलिए कोरिया से घरेलू उद्योग को हुई क्षति को आयातकों द्वारा आयातों के गलत वर्गीकरण के कारण निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा कोरिया के खिलाफ पहले शुरू न की गई जांच के संदर्भ में देखा जाना चाहिए।

ख. घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देशों और ऐसे अन्य देशों से हुए पाटित आयातों के कारण हुई थी जिन पर अब पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा है। वित्त मंत्रालय द्वारा इन देशों पर शुल्क अप्रैल 2001 में लगाया गया था। इस प्रकार घरेलू उद्योग के निष्पावन की जांच इन शुल्कों को लगाए जाने तथा मौजूदा देशों से हुई वास्तविक क्षति और वास्तविक क्षति के खतरे के संदर्भ में की जानी अपेक्षित है।

ग. घरेलू उद्योग को हुई क्षति का आकलन कोरिया और तुर्की से हुई क्षति के संदर्भ में संचयी रूप से किया जाना अपेक्षित है। इस संबंध में अनुबंध II में निर्धारित सभी शर्तें इस मामले में पूरी होती हैं।

घ. संबद्ध देशों से हुए आयातों में समग्र रूप में वृद्धि हुई है। जहां तक जांच अवधि में और उसके तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष में कोरिया से हुए आयातों का संबंध है इसके लिए जो बात नोट की जानी अपेक्षित है, वह यह है कि (क) कोरिया के उत्पादकों द्वारा पूर्ववर्ती वर्ष में भी पाटन किया जा रहा था जिसके बारे में उद्योग ने याचिका दायर की थी किन्तु आयातकों द्वारा आयातों के गलत वर्गीकरण के कारण जांच शुरू नहीं की गई थी ; (ख) वर्ष 1998-99 के लिए आयात संबंधी आंकड़े डीजीसीआईएंडएस के अनुसार हैं, जिनमें गलत वर्गीकृत पीएफवाई के आयात भी शामिल हैं

जबकि 1999-00 के लिए और जांच अवधि के लिए आयात संबंधी आंकड़े मिटकान के अनुसार जिनमें गलत वर्गीकृत पीएफवाई को शामिल नहीं किया गया है।

ड. भारत में पीओवाई के आयातों के संबंध में संबद्ध देशों से हुए आयातों के हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई।

च. संबद्ध देशों से हुए निर्यात की कीमत में अत्यधिक गिरावट आई। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप आयातों की पहुंच कीमत में भारी गिरावट आई।

छ. जहां तक तुर्की का संबंध है यह स्पष्ट किया जाता है कि वर्ष 1999-2000 में निर्यात कीमत को संबद्ध मात्राओं के साथ देखा जाना चाहिए। 1999-2000 में आयातों की मात्रा न्यूनतम सीमा से कम रही थी।

ज. इस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का उत्पादन लगभग स्थिर रहा था।

झ. जांच अवधि के दौरान घरेलू बिक्री मात्रा (और उत्पादन) में स्पष्ट वृद्धि होने के बावजूद यह नोट करना संगत है कि घरेलू उद्योग ने उत्पाद को इष्टतम कीमत से कम कीमत पर बेचना जारी रखा। इस प्रकार बिक्री की मात्राओं में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग अपने उत्पाद की उचित कीमत प्राप्त करने में सफल नहीं रहा था।

ञ. घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति में अत्यधिक गिरावट आई। बिक्री कीमतों में आई उक्त गिरावट निर्यात बिक्रियों (और इसप्रकार पहुंच कीमतों) में आई गिरावट का प्रत्यक्ष परिणाम थी। आयातों से भारतीय बाजार में कीमतों में भारी कटौती हो रही थी।

ट. बिक्री कीमतों में आई अत्यधिक गिरावट के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में कमी आई। घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा उठाने के लिए बाध्य किया गया था जो जांच अवधि के दौरान भी बना रहा।

ठ. उद्योग के लिए निवेशों पर प्राप्त आय नकारात्मक बनी रही।

ड. घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के अलावा संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग के लिए वास्तविक क्षति का खतरा भी उत्पन्न हुआ। इस संबंध में निम्नलिखित बातें संगत हैं :-

(i) संबद्ध देशों से आयात काफी अधिक रहे हैं।

(ii) संबद्ध देशों से हुए आयातों में पर्याप्त वृद्धि प्रदर्शित हुई है । यह तुर्की के मामले में स्पष्ट हो जाता है जबकि कोरिया के उत्पादकों द्वारा काफी समय से पाटन किया जा रहा था ।

संबद्ध देशों के निर्यातकों द्वारा पर्याप्त बेशी क्षमता धारित की जा रही है । पीसीआई की रिपोर्ट के अनुसार तुर्की के पास पीओवाई की 311,000 मी० टन से अधिक की क्षमता है । सृजित की गई इस क्षमता की तुलना में खपत केवल 162,000 मी० टन की है । इसके अलावा मौखिक सुनवाई के समय तुर्की सरकार के प्रतिनिधि द्वारा भी यह स्वीकार किया गया था कि तुर्की के अधिकांश वस्त्र उद्योग मांग की कमी का सामना कर रहे हैं और उनके प्रचालन स्तरों में भारी गिरावट आई है। ऐसा समझा जाता है कि निर्यातकों के पास 150,000 मी० टन से अधिक का बेशी उत्पादन है जिसे किसी बाजार में पहुंचाना है । अतः भारत का विशाल बाजार इसका स्वाभाविक विकल्प है ।

जहां तक कोरिया का संबंध है कोरिया में पीओवाई की कुल क्षमता 17,97,000 मी० टन की है । इसमें से कोरिया में पीओवाई की खपत केवल 11,15,000 मी० टन की समझी जाती है । कोरिया में घरेलू मांग में भी कमी आ रही है क्योंकि विश्व में चल रही आर्थिक मंदी के कारण उनके वस्त्र निर्यात भी प्रभावित हो रहे हैं । इस प्रकार दक्षिण कोरिया के पास कम से कम 800,000 मी० टन से लेकर 1 मिलियन मी० टन की पीओवाई की अतिरिक्त क्षमता है । यह भारत की कुल मांग से अधिक है । इसके अलावा दक्षिण कोरिया की कंपनियों/निर्यातकों ने भी वर्तमान जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया है ।

(iii) संबद्ध देशों से हुए आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों से काफी कम थी । इस प्रकार आयातों से घरेलू कीमतों में पर्याप्त कटौती हो रही थी । इस प्रकार की अतिरिक्त कटौती के साथ-साथ इन देशों में पर्याप्त निपटान योग्य क्षमताओं से घरेलू उद्योग को आसन्नवर्ती खतरा उत्पन्न होता है ।

(iv) चूंकि संबद्ध देशों में पीओवाई की मांग सृजित की गई क्षमताओं से काफी कम है और इसके अलावा चूंकि इन देशों के उत्पादकों के लिए दूसरे बाजारों में पहुंच कम हो गई है । इसलिए इन देशों के उत्पादकों के पास भारी स्टॉक जमा हो गया था और वे इस स्टॉक के निपटान हेतु बाजारों की तलाश कर रहे थे ।

इन समस्त मापदंडों से सामूहिक और संचयी रूप से यह सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों से वास्तविक क्षति हुई है। इसके अलावा संबद्ध देशों से हुए आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होने का खतरा उत्पन्न हुआ है।

9.3 मै0 एसएसएसए ड्यूपोट, तुर्की के विचार - क्षति के संबंध में

1. क्षति के संबंध में निर्यातक ने यह उल्लेख किया है कि जांच अवधि के दौरान उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है। कच्ची सामग्री की लागत में कमी आई है। रोजगार के स्तर में खास अंतर नहीं आया है। प्रारंभिक जांच परिणामों के अनुसार एकमात्र संभावित क्षति कीमतों और लाभप्रदता में गिरावट की है।
2. पोलिएस्टर उद्योग में विश्वव्यापी अधिक क्षमता के कारण कच्ची सामग्री और तैयार उत्पाद दोनों के संबंध में कीमतों में गिरावट आई है।
3. पाटन और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की पुष्टि नहीं हुई है।
4. वर्ष 1999 की तुलना में जांच अवधि के दौरान भारत को पीओवाई के आयातों में 40 % तक की गिरावट आई है। अतः मै0 एसएसएसए के निर्यातों को किसी क्षति के लिए जिम्मेवार नहीं ठहराया जा सकता।

9.4 संबद्ध देशों से हुए आयातों का हिस्सा

पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय, निर्दिष्ट प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कुल आयातों की मात्रा जो 99-00 में 49870 मी0 टन थी, जांच अवधि के दौरान घटकर 27663 मी. टन हो गई। तथापि, संबद्ध देशों से आयातों के हिस्से में संचयी रूप से वृद्धि हुई है जैसाकि नीचे दी गई तालिका से देखा जा सकता है।

	एकक	1998-99	1999-2000	जांच अवधि
आयात	मी. टन			
कोरिया गणराज्य	मी. टन	477	3498	1843
तुर्की	मी. टन	-	206	998
संबद्ध देश	मी. टन।	477	3704	2841

शुल्क लगाने वाले देश(ताईवान, थाइलैंड, इंडोनेशिया और मलेशिया)	मी. टन	1770	43644	24215
अन्य देश	मी. टन	150	2522	633
कुल आयात	%	2398	49870	27663
आयातों में हिस्सा				
कोरिया गणराज्य	%	19.8	7.01	6.66
तुर्की	%	0.	0.41	3.60
संबद्ध देश	%	19.8	7.42	10.26
शुल्क लगाने वाले देश(ताईवान, थाइलैंड, इंडोनेशिया और मलेशिया)	%	73.8	87.52	87.45
अन्य देश	%	6.2	5.06	2.29
कुल आयात		100.0	100.00	100.00
उत्पादन (भारतीय)	मी. टन	745.377	801,020	826,144
कुल मांग	मी. टन	769.363	850,890	853,807

प्राधिकारी ने वर्ष 1998-99 के लिए डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों पर विचार किया है, क्योंकि उस अवधि के लिए मिटकॉन के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। प्राधिकारी वर्ष 1999-2000 और 2000-2001 के लिए मिटकॉन के आंकड़ों पर भरोसा करते हैं क्योंकि डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों में जांच अवधि के आयात भी शामिल हैं।

मिटकॉन द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना देश के केवल प्रमुख सीमाशुल्क पत्तनों के संबंध में है। इसके अलावा, मिटकॉन के आंकड़ा का विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया गया है, तथ जिन आयातों का पीओवाई के रूप में गलत वर्गीकरण किया गया था, उन्हें ~~अलग~~ कर दिया गया है।

अतः यह देखा जा सकता है कि आयातों की मात्रा अब भी न्यूनतम सीमा से अधिक और अत्यधिक है और 7.42 % से बढ़कर 10.26 % हो गयी है (मिटकॉन के आंकड़ों के अनुसार) ।

9.5 निर्यात कीमत में गिरावट:

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वर्षों से कोरिया गणराज्य से निर्यात की कीमतों में तेजी से कमी किए जाने और तुर्की से पाटित कीमतों पर पर्याप्त मात्रा में निर्यात प्रारंभ होने के परिणामस्वरूप, संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है, जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है :

रुपये प्रति कि.ग्रा.

वर्ष	कोरिया		तुर्की	
	निर्यात कीमत	पहुंच कीमत	निर्यात कीमत	पहुंच कीमत
1997-98	70.76	96.23		-
1998-99	58.02	76.18		-
1999-2000	41.67	56.82	33.68*	45.92
2000-2001	38.94	47.20	39.54	47.92

*- मात्रा नगण्य

आयातों की पहुंच कीमत में तेजी से आई गिरावट पाटन का सहारा लेने वाले अन्य देशों द्वारा कीमतों में कमी किए जाने के साथ-साथ) ; के कारण घरेलू उद्योग अपनी कीमतें, उत्पादन लागत से कम करने के लिए बाध्य हुआ, जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय घाटा हुआ ।

9.6 उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग

भाग लेने वाली कंपनियों का उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग नीचे दी गई तालिका के अनुसार रहा है

वर्ष	उत्पादन मी.टन में	क्षमता उपयोग %	बिक्री मी. टन में
1998-99	330839	91.59	302492
1999-2000	352675	97.64	311263
2000-2001	367715	101.80	343481

वर्ष 1998-99, 1999-2000 तथा 2000-01 में उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग में बढोत्तरी प्रदर्शित हुई है।

9.7 बिक्री कीमत:

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान, पाटन के कारण आयात कीमतों में अत्यधिक कमी के कारण, उद्योग को अपने उत्पाद को उत्पादन लागत से काफी कम कीमत बेचने के लिए बाध्य किया गया है, जिसके कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

9.8 कीमत में कटौती

पाटित आयातों से घरेलू उद्योग उत्पादन लागत में बढोत्तरी होने के बावजूद अपनी कीमतें कम करने के लिए बाध्य हुआ है। जांच अवधि के दौरान आयातित सामग्रों का पहुंच मूल्य, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम था।

9.9 रोजगार

खराब प्रभालन स्तर के बावजूद भाग लेने वाली कंपनियों के रोजगार स्तर में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है।

9.10 लाभप्रदता

उद्योग को अपनी बिक्री कीमतें उत्पादन लागत से काफी कम करने के लिए बाध्य किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें वित्तीय घाटा हुआ है। उत्पादन लागत में पर्याप्त बढोत्तरी और कम पहुंच कीमतों के मद्देनजर अपनी कीमतें बढ़ाने में उद्योग की अक्षमता को देखते हुए वर्ष 2000-01 में उक्त घाटे में बढोत्तरी हुई है।

9.11 क्षति के संबंध में निष्कर्ष:

क. संबद्ध देशों से पाटन मार्जिन काफी अधिक है और आयात की मात्रा न्यूनतम सीमा से अधिक है।

ख. आयात की मात्रा काफी अधिक है और पीओवाई के आयात संबद्ध देशों के हिस्से में वृद्धि हुई है।

ग. निर्यात कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है। चालू वर्ष में पीटीए/डीएमटी/एमईजी की कीमतों में बढ़ोत्तरी हो देखते हुए संबद्ध देशों के निर्यातकों के लिए उत्पादन लागत बढ़ जानी चाहिए थी, जबकि जाँच अवधि के दौरान निर्यात कीमत में गिरावट आई है।

(घ) आयातों के कारण कीमत में भारी कटौती हो रही थी और घरेलू उद्योग को कीमत में युक्तिसंगत वृद्धि करने से रोका गया था।

(ङ.) घरेलू उद्योग की क्षति रहित बिक्री कीमत से काफी कम कीमत पर बिक्री करने के लिए बाध्य किया गया है।

(च) भारतीय उत्पादकों की उत्पादन की लागत में वर्ष 1999-2000 की तुलना में जाँच अवधि के दौरान वृद्धि हुई है जबकि उद्योग अपनी कीमतों में सस्ते आयातों के कारण वृद्धि और उत्पादन लागत को वसूल नहीं कर सका है।

उपर्युक्त मापदंड यह इंगित करते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

घरेलू उद्योग को पहले से ही हुई वास्तविक क्षति के अलावा घरेलू उद्योग वास्तविक क्षति के खतरे का सामना कर रहा है। संबद्ध देशों में सजित क्षमता उनकी घरेलू खपत से काफी अधिक है। इसके अलावा इस समय क्षमता उपयोग कम हैं और इसलिए निर्यातकों के पास काफी अप्रयुक्त क्षमता मौजूद है। उनकी घरेलू खपत की तुलना में अधिक क्षमता सकल भारतीय मांग से अधिक हैं।

10.0 कारणात्मक संबंध का साक्ष्य

संबद्ध देशों से आयात पाटित कीमतों पर हो रहे हैं। कई देशों की पहले से ही जाँच की जा रही है, जिसमें निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित प्रारंभिक जाँच परिणामों में बड़े पैमाने पर पाटन की पुष्टि की गई है। संबद्ध देशों से इतर देशों से आयात या तो सीमा से कम हैं या उनकी कीमतें अपेक्षाकृत अधिक हैं अथवा निर्दिष्ट प्राधिकारी पहले ही इन देशों से हुए आयातों के खिलाफ जाँच कर रहे हैं। घरेलू उद्योग की बाजार आसूचना में भी अन्य देशों से पाटित कीमतों पर किसी बड़े स्तर पर आयात के बारे में सूचना नहीं दी गई है। अतः अन्य देशों से जो आयात हुए हैं उनसे घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

पी ओ वाई की मांग में गिरावट नहीं आई है। अतः मांग में गिरावट ऐसा कोई कारक नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।

संबद्ध देशों और शुल्क लगाने वाले देशों में उत्पादकों द्वारा कीमतों में कमी करना घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण है। व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार अथवा निर्यात निष्पादन जैसा अन्य ऐसा कोई कारक नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो। वास्तव में घरेलू उद्योग पी ओ वाई के उत्पादन और इसकी बिक्री के बारे में एक सुस्थापित उद्योग है।

ट. भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

11.1 सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य पाटन को समाप्त करना है जो देश के सामान्य हित में है। यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तु के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक

प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है। किन्तु पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी, विशेष तौर पर तब जब शुल्क की लेवी ऐसी राशि तक सीमित कर दी जाती है जो कि याचिकाकर्ता कंपनी को हुई क्षति की पूर्ति करने के लिए जरूरी है। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों के लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, याचिकाकर्ता कंपनी के ह्रास को रोका जा सकेगा और संबद्ध वस्तु के उपयोभोक्ताओं को व्यापक विकल्प उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। पाटनरोधी उपायों से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे इसलिए उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

- 11.2 घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक पाटनरोधी शुल्क की सीमा का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए क्षमता उपयोग के इष्टतम स्तर पर उत्पाद की इष्टतम लागत पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग के लिए भारत में संबद्ध वस्तु की उचित बिक्री कीमतों पर विश्वास किया है।

ठ. निष्कर्ष

- 12.0 उपरोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

कोरिया गणराज्य और तुर्की के निर्यातकों ने संबद्ध वस्तु का निर्यात सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया है जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है।

भारतीय उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

यह क्षति संचयी रूप से संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के हुए पाटित आयातों के कारण हुई है।

- 13.0 उपरोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि:

(क) प्राधिकारी कोरिया गणराज्य और तुर्की के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 54 के अंतर्गत आने वाले पी ओ वाई के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।

(ख) प्राधिकारी पाटनरोधी शुल्क की राशि पाटन मार्जिन के बराबर अथवा ऐसे कम शुल्क की सिफारिश करने पर विचार करते हैं जिसे यदि लगाया जाए तो उससे घरेलू उद्योग की क्षति समाप्त हो जाएगी। इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच कीमत की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ताओं, समर्थनकारी कंपनियों की क्षति रहित बिक्री कीमत के साथ की गई थी जहां यह अंतर पाटन मार्जिन से कम था वहां पाटन मार्जिन से कम शुल्क लगाने की सिफारिश की गई है।

(ग) तदनुसार, प्राधिकारी पाटनरोधी शुल्क को लगाने के संबंध में प्रारंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं और संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 54 के अंतर्गत आने वाले पी ओ वाई के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं। पाटन रोधी शुल्क नीचे तालिका (3) में उल्लिखित राशि होगी:

देश	निर्यातक का नाम	पाटनरोधी शुल्क अम. डालर/किग्रा में
(1)	(2)	(3)
तुर्की	मै. एसएसएस ड्यूपोट साबांसी पोलिस्टर ए एस	0.434
	मै. कोरटेक्स मेनसुकट साबातु वे टिकारेट, ए एस तुर्की(कोरटेक्स)	0.360
	अन्य निर्यातक	0.546
कोरिया	सभी निर्यातक	0.605

14.0 इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के अधीन सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथा निर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3.3क 8ख, 9 और 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमा शुल्क शामिल होंगे।

15.0 उपरोक्त के अधीन रहते हुए प्राधिकारी दिनांक 23-11-2001 के प्रारम्भिक जांच परीणामों की पुष्टि करते हैं।

16.0 इस आदेश के खिलाफ कोई अपील उक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क उत्पाद शुल्क एवं स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्याधिकरण के समक्ष दायर की जा सकेगी।

एल. बी. सप्तश्रृंग, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

FINAL FINDINGS NOTIFICATION

New Delhi, the 16th August, 2002

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Partially Oriented Yarn (POY) from Republic of Korea and Turkey—Final Findings.

No. 36/1/2001-DGAD.— The Government of India having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed with regard to the investigations:

1.0 The procedure described below has been followed with regard to the investigations:

- The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the Rules, received written application from M/s Association of Synthetic Fibre Industry, 125, Uday Park, 1st Floor, New Delhi-110049 on behalf of the domestic industry, alleging dumping of POY originating in or exported from Republic of Korea and Turkey.
- The Authority issued a public notice dated 20th August, 2001 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigations concerning imports of POY originating in or exported from Republic of Korea and Turkey classified under heading 5402.4200 of the Customs Tariff Act, 1975.

- iii. The Authority issued a public notice of the preliminary findings dated 23rd November, 2001 published in the Gazette of India, Extraordinary.
- iv. The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to the known interested parties who were requested to furnish their views, if any, on the preliminary findings within forty days of the date of the letter;
- v. The Authority also forwarded a copy of preliminary findings to the Embassies of Korea RP and Turkey, New Delhi with a request that exporters and other interested parties may be advised to furnish their views on the preliminary findings.
- vi. The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally during 24.4.2002. All parties presenting views orally were requested to file written submissions, of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any.
- vii. Argument raised by the interested parties before announcing the preliminary findings, which have been brought out in the preliminary findings notified have not been repeated herein for sake of brevity. However, the arguments raised by the interested parties have been considered in the preliminary findings and/or these findings.
- viii. In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same have also been duly considered in these findings.
- ix. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- x. The Authority sought and verified information with respect to cooperative exporters from Turkey as deemed necessary for the investigation.

- iv. The Authority also conducted cost investigation and worked out optimum cost of production / cost to make and sell in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles.
- v. The investigations covered the period of 1st April, 2000 to 31st March, 2001 (12 months);
- vi. *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

B. VIEWS OF THE PETITIONERS, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES :

2.0 The petitioner, exporters, importers and other interested parties have expressed their views and the same are briefly mentioned below:

2.1.0 Views of the Domestic Industry:

- 2.1.1 The Petitioners have stated that they had filed petition against Thailand, Indonesia, Taiwan, Malaysia and South Korea. The case was, however, initiated only against Thailand, Indonesia, Taiwan and Malaysia vide initiation notification dated 10th November, 2000. The investigations culminated in final findings, wherein the Designated Authority confirmed large scale dumping resorted by the exporters from those countries. It was also found by the Designated Authority that most of responding exporters had exported POY to India at prices below their cost of production.
- 2.1.2 Faced with the continued dumping from Korea and dumping from Turkey, the domestic industry was forced to approach the Designated Authority again with a request for imposition of anti dumping duties on exports from these countries. The Designated Authority was kind enough in initiating investigations against Korea and Turkey vide notification dated 20th August, 2001. The preliminary findings notified by the Designated Authority again confirms the existence of large scale dumping by the exporters in these countries.
- 2.1.3 Petitioners have stated that there is no argument to the contrary regarding product under consideration and like article by any interested party.

- 2.1.4 They have stated that participating companies alongwith supporting companies constitute more than 50% of Indian production and thus satisfy the standing to file the petition.

Other Issues:

2.2.0 Domestic Industry has requested the DUTY IN TERMS OF US\$

Though the Designated Authority has already recommended anti-umping duty in terms of US\$, it is submitted that the final duties may also be recommended in terms of US\$ only, so that erosion in the quantum of protection does not take place on account of changes in the exchange rate.

It is evident from the preliminary findings and the submissions made hereinabove that there was severe dumping of POY in India causing material injury to the domestic industry. It is requested that the preliminary findings may kindly be confirmed and definitive duties recommended.

2.3 M/s.Sonmez Filament Bursa, Turkey

Exporters have stated that they have not been in a position to export any POY into India either directly or through any affiliated company.

2.4 Embassy of Republic of Korea, New Delhi

It has been stated that two Korean companies, namely, M/s.TAE-Han Synthetics Fibre Co.Ltd. and M/s. JEIL Synthetics Fibre Co.Ltd. have not exported Partially Oriented Yarn (POY) to India since last five years.

The above companies have not shown interest in taking part in the anti dumping investigations with respect to POY exports to India and have no interest in attending public hearing.

2.5 M/s. Jeil Synthetics Fibre Co.Ltd., Seoul, Korea

The exporter have stated that they have not exported POY during the POI i.e. from 1st April 200 to 31st March, 2001. Their last export was in February, 1997. There was no company who produced DOPE Dyed (colour) POY like there is in India during that period.

They have also stated that their POY production is DOPE Dyed(colour) Yarn and not raw white yarn that India produces and the price of DOPE Dyed (colour) Yarn is much higher than the raw white (regular) yarn in India.

C EXAMINATION OF ISSUES RAISED

- 3.0 The submissions made by the petitioner, exporters and importers to the extent they are relevant under the Rules and have a bearing upon the case, have been examined and dealt with at appropriate places hereunder.

D PRODUCT UNDER CONSIDERATION

- 4.1 The Product Under Consideration in the present Investigation is Partially Oriented Yarn, originating and exported from Korea RP and Turkey. Partially Oriented Yarn is generally known as "POY" in the commercial and market parlance and has been referred to as POY in this investigation. POY is a yarn of polyester and is made in wide range from 50 Denier to 530 Denier to meet the requirement of different segments. Denier relates to the fineness of the yarn, lower the denier, finer the yarn. POY is an intermediate, which is subject to further processes (e.g. texturing or draw-twisting) to make it suitable for weaving or knitting into fabrics. POY is different from PFY (having custom classification 5402.43) and PFY is not within the scope of the present investigations.
- 4.2 The POY is classified under Chapter 54 of the Customs Tariff Act. Description of Chapter 54, in so far as it concerns POY is as follows:

Chapter/ Subheading	Description
Chapter 54	Man Made Filaments
Four Digit 54.02	Synthetic filament yarn (other than sewing thread), not put up for retail sale, including synthetic monofilament of less than 67 decitex
	Other yarn, single, untwisted or with a twist not exceeding 50 turns per meter:
Six Digit 5402.42	Of polyesters, Partially Oriented

The classification is, however, indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

- 4.3 Authority notes that no arguments have been raised by any interested parties disputing that the POY produced by the petitioners and the POY produced and exported by the exporters are different with regard to product under consideration.

E LIKE ARTICLES:

- 5.1 Rule 2(d) of the Anti dumping Rules specifies that "Like Articles" means an Article, which is identical or alike in respects to the product under investigation or in the absence of such an Article, another article, having characteristics closely resembling those of the articles under examination;
- 5.2 The petitioners have claimed that there is no known difference in the goods produced by the participating companies in particular and by the Indian industry in general & POY exported from the subject countries which can have an impact on price. POY produced by Indian industry and imported from these countries are similar in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers have used the POY imported from these countries and POY produced by the domestic industry interchangeably. POY produced by the participating companies and imported from these countries is to be treated as like articles under the anti-dumping rules. There is no argument raised by any interested party contrary to the above claim of petitioners. In view of the above, the Authority holds that POY being produced by the domestic industry and those being imported from the subject countries are *Like Articles within the meaning of the Rules*;

F DOMESTIC INDUSTRY

- 6.0 Petitioners have claimed that there are more than 34 producers of POY in India who have created capacity for POY production. The petition is filed by ASFI and is supported by M/s Reliance, Indo Rama, Century, and are participating. However, M/s DCL, Sanghi & Recron are only supporting the petition

The Participating companies accounted for a major proportion of production during the period of investigation and the Authority, therefore, holds that the petitioners satisfy the standing to file the present petition and the Participating companies constitute the "Domestic Industry" under the Rules.

G DUMPING

7.0 Normal Value, Export Price, Dumping Margin and Examination by the Authority is discussed hereunder.

7.1. Under Section 9A (1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) "the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-
 - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
 - (b) the cost of production of the said article in the country of origin alongwith reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin".

7.2 Views of Domestic Industry

ON DUMPING

The dumping margin in the preliminary findings have been established on the basis of the responses filed by the exporters in case of Turkey, while the same is based on best information available in the case of Korea. It is relevant to point out that the exporters from Korea have not responded at all to the notice of initiation sent by the Designated Authority.

In case of Turkey, the Designated Authority has admitted the responses of the exporters without rejection of any data/claim. We are sure, should the responses be scrutinized in detail, the dumping margin would only be higher than what has been claimed. In particular, the petitioners request the Designated Authority to kindly examine whether the exporter had sufficient viable domestic sales in accordance with Annexure 1 to the Rules. Further, the cost of production claimed by the exporters may also kindly be examined with reference to the claims made by the domestic industry.

7.3 Comments of domestic industry on views of Government of Turkey.

1. The Embassy has stated that the Turkish Govt. and companies concerned have given detailed comments. However, neither the preliminary findings states so nor the petitioners are aware of any comments filed after the preliminary findings.
2. Imports from Turkey were more than de-minimus limits. Further, neither under Indian Rules nor under WTO Agreement on Anti Dumping, there is any condition of de-minimus with reference to the demand of the product in the Country.
3. Imports from Turkey and Korea RP are required to be assessed cumulatively, conditions for which are fully met in this case. It is not even the argument of opposing interested parties that cumulative assessment would not be appropriate in this case.
4. It is misleading and frivolous to state that the imported product from Turkey was inferior in nature. No evidence has been adduced by the exporters to establish that the exported product was different from domestically sold product. The exported product was a "like article" to the domestically sold product and product being sold by Indian producers. Further, the normal value is required to be seen for the "like article" for the purpose of dumping margin. Similarly, the injury margin is required to be seen with reference to the "like product" in India.
5. It is admitted fact that the imports from Turkey were higher than de-minimus. Such being the case, imports cannot be said to be negligible. In fact, in a way, the exporters admit injury to the Indian producers.
6. While it may be true that the export price from Turkey did not show declining trend, it is relevant to note that (a) export price from Turkey and Korea RP are required to be seen cumulatively (which shows that the export price from the subject countries declined in the investigation period as compared to previous years; (b) volume of exports by Turkey were very small (de-minimus) in the year 1999-2000. Such being the case, the export price only of Turkey in 1999-2000 is not representative. The prices in 1999-2000 would have been even introductory prices, as the entire volume involved was only 0.41% of total imports as against 3.6% in the investigation period.
7. With regard to exports in the second half of 2001, it is submitted that imports in the investigation period as a whole is the only relevant parameter. Even if the imports were only in one month of the investigation period (volume of which was more than de-minimus to the imports investigation period) the same is liable to duty. The imports in the instant case, by their own admission, were in about six months of the investigation period. We draw kind attention of the DA to various completed cases wherein the imports were not uniformly spread throught the investigation period.
8. No cogent reasons have been brought out by the opposing interested parties to justify termination of investigations. In fact, the responses filed by the exporters from Turkey clearly establishes—of significant dumping margin. The information filed by the petitioner companies establishes material injury caused to the domestic industry and further threat of material injury to the domestic industry.

7.4 Views of Govt. of Turkey:

The Director General of Imports, Government of Turkey in their submissions have stated the following:

1. The Government of Turkey would like to stress the fact that the products imported from Turkey amounting only 0.1% of total demand and being substandard were in no way in competition with domestically produced products and therefore, even if there exists any injury, this should not be attributed to insignificant imports from Turkey.
2. It has been observed that the summaries provided were not in sufficient details to permit a reasonable understanding of the substance of the information, figures and calculations of the Turkish producers were not provided and the factors listed in the Article 3 of the Agreement were not examined at all.
3. It is observed in the notification that the investigation period chosen for this investigation cover the period 1st April, 2000 to 31st March, 2001. Despite the fact that the investigations period should be chosen as to cover the most recent period with respect to initiation notification.
4. Turkey has concerns as regard to the applicability of cumulative estimation for the imports from Turkey and Korea in the present investigations.
5. While considering the cost of credit adjusted for M/s. SASA it is stated that the Authority calculated the cost of credit as the weighted average of the cost for the years 2000 and 2001 rather than the actual cost of credits used. The imputed credit cost adjustment was claimed by the respondent to adjust export prices and home market prices for deferred payments term to make meaningful comparison.
6. The quality differences between the domestically sold and exported products were previously mentioned by M/s. Korteks in its replies to the questionnaire contrary to the statements made in preliminary findings which claims that there was no argument raised by any interested party. Turkey submits that the differences in the physical feature and the quality of domestically sold product and product exported to India should be taken into account and duty adjustments should be allowed. Hence the dumping margins established should be corrected accordingly.
7. It is a review of the Government of Turkey that the Authorities improperly attributed the declining prices and declining profitability in the domestic industry, if any, to the effects of the import from Turkey and fail to examine the second impact on imports on the domestic industry as required by Article 3.4 of the Agreement.
8. There is no positive evidence of causal link between imports and alleged injury in the domestic market.

9. The Government of Turkey has requested the Indian Authority to evaluate the points raised above and secondly terminate the investigation concerning imports originating in Turkey.

7.5 M/s.Sonmez Filament Bursa, Turkey

Exporters have stated that they have not been in a position to export any POY into India either directly or through any affiliated company.

7.6 Embassy of Republic of Korea, New Delhi

It has been stated that two Korean companies, namely, M/s.TAE-Han Synthetics Fibre Co.Ltd. and M/s. JEIL Synthetics Fibre Co.Ltd. have not exported Partially Oriented Yarn (POY) to India since last five years.

7.7 The above companies have not shown interest in taking part in the anti dumping investigations with respect to POY exports to India and have no interest in attending public hearing.

7.8 M/s. Jeil Synthetics Fibre Co.Ltd., Seoul, Korea

The exporter have stated that they have not exported POY during the POI i.e. from 1st April 200 to 31st March, 2001. Their last export was in February, 1997. There was no company who produced DOPE Dyed (colour) POY like there is in India during that period.

They have also stated that their POY production is DOPE Dyed(colour) Yarn and not raw white yarn that India produces and the price of DOPE Dyed (colour) Yarn is much higher than the raw white (regular) yarn in India.

7.9 Examination of the issues by the Authority

On the views of Government of Turkey.

(Through the Commercial Counsel Officer, Turkish Embassy in New Delhi)

- a. The Authority notes that the imports from Turkey were more than de-minimis limits. Further, neither under Indian Rules nor under WTO Agreement on Anti Dumping, there is any condition of de-minimis with reference to the demand of the product in the Country.
- b. The Authority notes that imports from Turkey and Korea RP are required to be assessed cumulatively, conditions for which are fully met in this case.
- c. As regards to the imported product from Turkey was inferior in nature, the Authority notes that except for the evidence indicated on the sales invoice that they have sold under the nomenclature 'substandard', no evidence has been adduced by the exporters to establish that the exported product was different from domestically sold product. The exported product was a "like article" to the domestically sold product and product being sold by Indian producers.

7.10 M/s SASA, Turkey**Normal Value**

The company furnished transaction-wise and denier-wise details of sales made in home markets in respect of 133 Dtex SS and 283 Dtex SS and other domestic sales. The company also furnished information on cost of production of domestic sales in respect of types of POY exported to India. It has been observed that in case of 283 Dtex POY exported to India and also sold in the domestic market the average sales realisation is less than the Cost of production. Accordingly for the purpose of determination of Normal Value the cost of production of this denier of POY during the period of investigation has been considered for the purpose of assessment of profitable transactions in accordance with Annexure I of the Rules.

The Normal value has been determined based on information furnished in respect of 133 Dtex SS and 283 Dtex SS based on viable domestic sales. The Authority has determined average selling price for two types of POY sold by the company in the domestic market during the POI after allowing adjustments on account of credit cost on domestic sales.

Export Price:

The export price has been separately determined for two types of POY exported to India. Adjustments claimed by the company on account of ocean freight, insurance, commission, inland freight and handling has been allowed as claimed by the company and verified by the Authority.

The normal value for two types of POY sold in the domestic market has been compared with two types of POY exported to India separately. The Authority has determined the average dumping margin on the basis of volume of exports for two types POY exported to India.

7.11 M/s Korteks, Turkey**Normal-Value.**

The exporter has furnished details of domestic sales for all deniers of POY during the period of investigation. The exporter has claimed that for the purpose of comparison of domestic sales price with the export price same deniers should be considered. They have furnished separate details of the domestic sales for the same deniers/ types of POY exported to India. However, it has been observed that the company has not sold in the domestic market all types of deniers exported to India. It has been observed that in case of two types of POY exported to India and also sold in the domestic market the sales realisation is less than the Cost of production. Accordingly for the purpose of determination of Normal Value the average cost of production of POY including SGA, interest and reasonable returns during the period of investigation has been considered in absence of representative sales to appropriate third countries.

EXPORT PRICE

The weighted average export price has been determined separately for all types of POY exported to India. Adjustments claimed by the company on account of ocean freight, insurance, commission, inland freight and handling has been allowed as claimed by the company.

The normal value as discussed above has been compared with weighted average export price of POY exported to India for determining the dumping margin.

7.12 Determination of Dumping Margin in case of Non-cooperative Exporters:

The Authority notes that no information in the prescribed proforma has been filed by any other exporter from subject countries (including Korea RP) except for exporters discussed in above paragraphs. The Authority has, therefore, proceeded on the basis of Rule 6(8) i.e. with the best information available.

Accordingly, the Normal Value and export price for 'other exporters' from a particular country is proposed to be based on the information furnished by the petitioner/ best available information.

- 8.1 Dumping Margin: The Rules relating to comparison provides comparison of normal value and export price provides as follows:

"While arriving at margin of dumping, the designated authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at the ex-works level, and in respect of sales made at as nearly as possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sales, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability".

- 8.2 Accordingly, the Authority has determined the normal value and export price at ex-factory level for cooperative exporters and other non cooperative exporters for the purpose of final determination.

<u>Country</u>	<u>Name of the exporter</u>	<u>Normal Value</u> <u>US\$/kg</u>	<u>Export Price</u> <u>US\$/kg</u>	<u>Dumping Margin</u> <u>(DM)</u> <u>US \$/kg</u>	<u>D M as</u> <u>a % of</u> <u>Export</u> <u>price</u>
Turkey	M/s SASA Dupont Sabanci Polyester AS	***	***	***	62.16
	M/s Korteks Mensucat Sabatu Ve Ticaret AS., Turkey, (Korteks)	***	***	***	44.38
	Other Exporters	***	***	***	139.40
Korea RP	All Exporters	***	***	***	77.86

I INJURY & CAUSAL LINK ::

- 9.0 Under Rule 11 supra, Annexure-II, When a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred, to a significant degree;
- 9.1 Rule (iii) of the Annexure II to the Rules requires that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigation, The Authority will cumulatively assess the effect of such imports. Such assessment can be, however, made only if it is determined that:
- a) the margin of dumping in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the import of the like article in India, and
 - b) the cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.

The various factors relating to injury to domestic industry have been discussed in the preliminary findings and the same is being considered for final determination.

The argument raised by the various interested parties is as under:

9.2 Views of Domestic Industry:

ON INJURY AND CAUSAL LINK

It is submitted that the severe dumping of POY in India has caused material injury to the domestic industry, which is evident from the petition filed by the domestic industry and the preliminary findings notified by the Designated Authority. They have submitted that the following parameters clearly establish that the domestic industry has suffered material injury:

- a. Since the exports from Korea have been continuing at dumped prices for quite some time (for which the domestic industry had filed a petition also), the injury to the domestic industry from Korea should be seen in the context of non-initiation of investigations against Korea earlier by the Designated Authority due to misclassification of imports by the importers.
- b. The domestic industry was suffering material injury from the dumped imports from the subject countries as also from other countries which are now attracting anti dumping duties. Duties on these countries were levied by the Ministry of Finance in April, 2001. Thus, performance of the domestic industry is required to be examined in the context of imposition of these duties and material injury and threat of material injury from the existing countries.
- c. The injury to the domestic industry is required to be assessed cumulatively from Korea and Turkey. The conditions laid down under Annexure II in this regard are fully met in the instant case.
- d. The imports from the subject countries have increased in absolute terms. So far as imports from Korea in the investigation period and immediately preceding year are concerned, what is required to be noted is that (a) Korean producers were resorting to dumping in the previous year also, for which the industry had filed the petition but investigations were not initiated due to misclassification of imports by the importers; (b) the import data for the year 1998-99 is as per DGCI&S which includes misclassified PFY imports also, while the import data for 1999-00 and investigation period is as per MITCON which excludes misclassified PFY.'
- e. The share of imports from subject countries increased significantly in terms of imports of POY in India.
- f. The export price from the subject countries declined very significantly. The landed price of imports, as a direct consequence, declined significantly.

- g. With regard to Turkey, it is clarified that the export price in the year 1999-2000 should be seen alongwith the associated volumes. The volume of imports in 1999-2000 was de-minimus.
- h. The production of the domestic industry was almost stagnant during the period.
- i. In spite of the apparent increase in the domestic sales volume (and production) during POI, it is pertinent to note that the domestic industry continued to sell the product at sub-optimal prices. Thus, in spite of increasing the sales volumes, the domestic industry was not able to recover fair price for their product.
- j. Sales realisation of the domestic industry declined significantly. The decline in the selling prices was a direct result of decline in the export prices (and hence landed prices). The imports were significantly undercutting the prices in the Indian market.
- k. Significant decline in the selling prices resulted in deteriorating profitability of the domestic industry. The domestic industry was forced to suffer financial losses, which continued even in the investigation period.
- l. The return on investments remained negative for the industry.
- m. The dumped imports from the subject countries, in addition to the material injury inflicted on the domestic industry, posed a threat of material injury to the domestic industry. Following are relevant in this regard:-
 - (i) The imports from the subject countries have been significant.
 - (ii) The imports from the subject countries have shown significant growth. The same is evident in case of Turkey, while the Korean producers had been dumping for quite long.

The exporters from the subject countries have been holding significant surplus capacities. As per PCI report, Turkey is holding POY capacities in excess of 311,000 MT. Against this capacity created, the consumption was only 162,000 MT. Further, it was admitted even by the representative of Govt. of Turkey at the time of oral hearing that most of the Textile Industry in Turkey is suffering from lack of demand, and operating levels have come down substantially. The exporters are understood to be having an excess of more than 150,000 MT, which has to find a market. The vast Indian Market is, therefore, a natural choice. With regard to Korea, total capacity of POY in Korea is 17,97,000 MT. Against this, the consumption of POY in Korea is understood to be only 11,15,000 MT. This domestic demand in Korea also is declining, as their Textile exports are also suffering due to the economic slow down in the world. Thus, South Korea has atleast 800,000MT to 1 Million MT of surplus POY capacity. This is more than India's total demand. Further, South Korean companies/exporters have also not co-operated with the Designated Authority in the present investigations.

(iii) The landed price of imports from the subject countries was significantly below the selling prices of the domestic industry. Thus, the imports were significantly undercutting the domestic prices. Such significant undercutting coupled with significant disposable capacities in these countries implies an imminent threat to the domestic industry.

(iv) Since the demand of POY in the subject countries is far lower than the capacities created, and further since access to other markets for the producers in these countries have reduced, the producers in these countries were holding significant inventories and were looking for markets for disposal of these inventories.

All the parameters, collectively and cumulatively establish that the domestic industry has suffered material injury from dumped imports. Further, the imports from the subject countries threatened material injury to the domestic industry.

9.3 Views of M/s. SASA Dupont, Turkey – on injury:

1. As regards to injury, the exporter have stated that during the POI the production, capacity utilisation and sales volume has increased. Raw material cost have decreased. The employment have not significantly changed. The only possible injury as per the preliminary findings are falling prices and profitability.
2. World wide over capacity in the polyester industry has caused fall in prices in respect of both raw material and finished products.
3. The causal link has not been established between dumping and injury.
4. The imports of POY to India has decreased by 40% during POI compared to 1999. Therefore, any injury cannot be attributed to exports of M/s. SASA.

9.4 Share of imports from subject countries:

While examining the volume of the dumped imports, the Designated Authority notes that the volume of total imports which was 49870MT in 99-00 declined to 27663 MT during POI. However, share of imports have cumulatively increased from subject countries as may be seen from the table below.

	Unit	1998-99	1999-2000	POI
Imports	<u>Volume</u>			
Korea RP	MT	477	3498	1843
Turkey	MT		206	998
Subject countries	MT	477	3704	2841
Countries attracting duties (Taiwan, Thailand, Indonesia and Malaysia)	MT	1770	43644	24215
Other countries	MT	150	2522	633
Imports total	MT	2398	49870	27663
Share in Imports				
Korea RP	%	19.8	7.01	6.66
Turkey	%	0.	0.41	3.60
Subject countries	%	19.8	7.42	10.26
Countries attracting duties (Taiwan Thailand, Indonesia & Malaysia)	%	73.83	87.52	87.45
Other countries	%	6.2	5.06	2.29
Imports total	%	100.0	100.00	100.00
Indian Production	MT	745,377	801,020	826,144
Total Demand	MT	769,363	850,890	853,807

Authority has taken into consideration DGCI&S data for the year 1998-99 as MITCON data is not available for that period. The Authority is relying upon MITCON data for 1999-2000 and 2000-2001, as the DGCI&S data includes imports of PFY also.

The information provided by MITCON is only in respect of major customs ports in the Country. Further, the MITCON data has been analysed in detail and imports misclassified as POY have been excluded. It may thus be seen that the volume of imports is still more than de minimus and significant and the same has increased from 7.42% to 10.26% (as per MITCON data).

9.5 Decline in export price:

Authority notes over the years the sharp reduction in the export price from Korea RP and the commencement of exports from Turkey at dumped prices in substantial volumes, thus resulting in steep reduction in the landed price of imports from the subject countries, as may be seen from the following table:

Years	Rs. per Kg.			
	Korea		Turkey	
	Export price	Landed price	Export price	Landed price
1997-98	70.76	96.23		-
1998-99	58.02	76.18		-
1999-00	41.67	56.82	33.68*	45.92
2000-01	38.94	47.20	39.54	47.92

* volume very insignificant.

The steep decline in the landed price of imports (alongwith reduction in the prices by other countries resorting to dumping) forced the domestic industry to reduce its prices far below its cost of production, resulting in severe financial losses to the domestic industry.

9.6 Production, sales and capacity utilisation:

Production, sales and capacity utilization of the participating companies are as given in the table below:

Years	Production in MT	Capacity Utilization %	Sales in MT
1998-99	330839	91.59	302492
1999-00	352675	97.64	311263
2000-01	367715	101.80	343481

The production, sales and capacity utilisation has shown improvement in the year 1998-99, 1999-2000 & 2000-01.

9.7 Selling Price

Authority notes that due to dumping, the industry has been forced to sell its product below the cost of production during the period of investigation and due to steep reduction in import prices, resulting in material injury to the domestic industry.

9.8 Price Undercutting

The landed price of subject goods from subject countries compared to 1999-2000 has declined. The dumped imports have forced the domestic industry to sell its products far below its cost of production.

9.9 Employment

The employment level in the participating companies has not undergone any significant change due to poor operating levels.

9.10 Profitability

The industry has been forced to keep its selling prices much below its cost of production, resulting in financial losses. The losses have increased in 2000-01, in view of substantial increase in the cost of production and inability of the industry to recover the same in view of lower landed prices. Further, the attempt to increase the selling prices by the domestic industry resulted in steep increase in the import volumes.

9.11 Conclusion on injury:

- a) The dumping margins from the subject countries are significant and volume of imports are more than de-minimus;
- b) The volume of Import is significant and share of subject countries in imports of POY has increased;
- c) The export price has declined significantly. The cost of production should have increased for the exporters from the subject countries in the current year in view of increase in the PTA/DMT/MEG prices, whereas the export price has reduced in the period of investigation;
- d) The imports were causing severe price undercutting and prevented the domestic industry from effecting legitimate price increases;
- e) The domestic industry has been forced to sell at prices significantly below the non injurious price;
- f) The cost of production of the Indian producers increased during the period of investigation as compared to year 1999-2000. However, the industry could not increase its prices and recover the cost of production in view of cheaper imports.
- g) The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from subject countries are more than the limit prescribed under the Rules. Cumulative assessment of the effect of the imports from Korea RP and Turkey is appropriate since the export prices from these countries were directly competing with the prices offered by the Domestic Industry in the Indian market.

The above parameters indicate that the domestic industry has suffered material injury due to dumped imports.

10.0 EVIDENCE OF CAUSAL LINK

The imports from the subject countries are being at dumped prices. A number of countries are already being investigated, wherein the preliminary findings notified by the Designated Authority confirms large scale dumping. The Imports from countries other than subject countries are either de-minimus or the prices are higher or the Designated Authority is already conducting Anti Dumping investigations against imports from these countries. The market intelligence of

the domestic industry also does not suggest any significant imports at dumped prices from other countries. The imports from other countries have, therefore, not caused any injury to the domestic industry.

Demand for POY has not declined. Decline in demand is, therefore, not a factor, which could have caused injury to the domestic industry.

Reduction in the export prices by the producers from the subject countries and the countries attracting duties is the cause for the injury to the domestic industry. There is no other factor such as trade restrictive practices or export performance, which has caused injury to the domestic industry. In fact, the domestic industry is well established with regard to production and sale of POY.

K Indian Industry's Interest and other issues:

- 11.1 The purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is in general interest of the country. It is recognized that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures, particularly if the levy of the anti dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. Imposition of anti dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.
- 11.2. To ascertain the extent of anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority relied upon reasonable selling prices of subject goods in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilisation for the domestic industry.

L CONCLUSIONS:

12.0 The Authority, after considering the foregoing, concludes that:

- ◆ Exporters from Korea RP and Turkey have been exporting subject goods below normal value resulting in dumping;
- ◆ The Indian Industry has suffered material injury;
- ◆ The Injury has been caused cumulatively by the dumped imports of the subject goods from subject countries.

13.0 The Authority after considering the foregoing, concludes that

- (a) The Authority recommends imposition of definitive anti dumping duty on all imports of POY falling under Chapter 54 of Customs Tariff Act originating in or exported from Turkey and Korea RP.
- (b) The Authority consider recommending the amount of anti dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to domestic industry. The average landed price of the imports, for the purpose, was compared with the Non-Injurious selling price of the petitioner companies, determined for the period of investigation. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended.
- (c) Accordingly, the Authority confirms the preliminary findings with regard to imposition of anti-dumping duty and recommends imposition of definitive anti dumping duty on all imports of POY falling under the Chapter 54 of Customs Tariff Act originating in or exported from subject countries. The anti dumping duty shall be the amounts mentioned in column (3) below:

<u>COUNTRY</u>	<u>Name of the exporter</u>	<u>Anti dumping duty in US \$/Kg</u>
(1)	(2)	(3)
Turkey	M/s SASA Dupont Sabanci Polyester AS	0.434
	M/s Korteks Mensucat Sabatu Ve Ticaret AS, Turkey, (Korteks)	0.360
	Other Exporters	0.546
Korea RP	All Exporters	0.605

- 14.0 Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B and 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
- 15.0 Subject to above , the Authority confirms the preliminary findings dated 23.11.2001
- 16.0 An appeal against this order shall lie to the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act Supra.

L.V. SAPTHARISHI, Designated Authority

